बाइबल टीचर

वर्ष 15 | मार्च 2018 | अंक 4

सम्पादकीय

प्रभु यीशु एक दिन वापस आयेगा

आज अक्सर यह प्रचार सुनने को मिलता है कि यीशु जल्द वापस आ रहा है। टी.वी. चैनलों पर भी प्रचारक बोलते हैं कि यीशु शीघ्र वापस आयेगा। यीशु के वापस आने के विषय में बाइबल की कई आयतें हमें बताती है। यीशु ने भी अपने चेलों से कहा था कि मैं फिर वापस आऊंगा (यूहन्ना 14)। यीशु ने कहा था, ''इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा।'' (मत्ती 24:42)। स्वर्गदूतों ने भी कहा था, ''हे गलीली पुरुषों तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा। (प्रेरितों 1:11)। हमें एक बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि उसके आने के विषय में कोई नहीं जानता। एक बार उसके चेलों ने भी कहा था कि यीशु हम जानना चाहते हैं कि तेरा आना कब होगा? यीशु ने उन्हें उत्तर दिया था कि, ''उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता, देखो जागते रहो और प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा?'' (मरकुस 13:32-33)।

बहुत से लोगों ने पिछले वर्षों में दावा किया था कि यीशु इस तिथि को अथवा इस सन् में आयेगा, परन्तु उनके वे सब दावे झूठे हो गये और अभी तक वह वापस नहीं आया और कई लोग ऐसा सोचकर अपने विश्वास में डगमगा जाते हैं परन्तु मित्रों ऐसा नहीं है। उसने प्रतिज्ञा की है और वह जरूर वापस आयेगा। पतरस कहता है कि ''हे प्रियो, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है। प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और यह नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सबको मन फिराव का अवसर मिले। परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाई आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तृप्त होकर पिघल जाएंगे और पृथ्वी ओर उस पर के सब काम जल जाएंगे।'' (2 पतरस 3:9-10)।

कई लोगों का कहना है कि यीशु पृथ्वी पर 1000 साल तक राज्य करने

आयेगा। परन्तु बात तो यह है कि जब पृथ्वी और उस पर के सब काम जल जाएंगे तब पृथ्वी पर उसके राज्य करने का कोई अर्थ नहीं है। और दूसरी बात यह है कि वह बादलों पर आयेगा ताकि उसके लोग उसे हवा में या बदलो में मिले। प्रकाशित वाक्य की पुस्तक बताती है ''देखो, वह बादलों के साथ आने वाला है; और हर एक आंख उसे देखेगी'' (प्रकाशित 1:7)। एक और स्थान पर परमेश्वर का बचना बताता है; कि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा'' (मत्ती 24:27)। प्रेरित पौलुस ने कहा था कि उसका आना पलक मारते ही होगा। वह कहता है और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकी जाएंगी। (1 कुरि. 15:52)। जब यीशु वापस आयेगा तो उसके विषय में लिखा है कि वह आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा। और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेगें (1 थिस्स. 4:16)।

प्रिय मित्रो, जरा सोचिये कि प्रभु जिस दिन आयेगा, उस दिन का दृश्य कैसा होगा? बाइबल बताती है कि उस दिन जितने कब्रों में हैं वे सब जी उठेंगे। यूहन्ना इस प्रकार से बताता है कि, ''इससे अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में है।, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुथान के लिये जी उठेंगे (यूहन्ना 5:28-29)। यीशु का वापस आने का कारण होगा कि वह जगत का न्याय करे तथा सब उसके न्याय आसान के सामने इक्ट्टे होंगे। (2 कुरि. 5:10)। आज हमें अपने जीवनों को जांचना है। क्या हमने सुसमाचार का पालन किया है? प्रभु यीशु ने कहा था, जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। क्या हमने यीशु में विश्वास करके बपतिस्मा लिया है? (मरकुस 16:16)। कया हमने पापों से अपना मन फिराया है? (प्रेरितों 2:38)। यदि आपने सुसमाचार को मान लिया है तो क्या आप प्रभु और उसकी कलीसिया के प्रति विश्वास योग्य है? जीवन का मुकुट केवल उन्हें ही मिलेगा जो मृत्यु तक विश्वास योग्य बने रहेंगे।

मसीही लोग आरम्भ से ही उसकी बाट जो रहे हैं। पहली शताब्दी के मसीही यीशु के दोबारा आने पर विश्वास करते थे तथा आज भी मसीहियों का यह विश्वास है कि यीशु एक दिन अपनी कलीसिया को वापस लेने आयेगा। यीशु वापस आ रहा है, क्या आप तैयार हैं? क्या आपने अपने जीवनों को उसे दे दिया है? क्या आप उसके वापस आने का इंतजार कर रहे हैं? जिस दिन वह आयेगा उस दिन लोग मनुष्य के पुत्र अर्थात् यीशु को सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे (लूका 21:27)। मसीही लोगों को अपने प्रभु का इंतजार है (1 कुरि. 1:7)। प्रत्येक विश्वास योग्य मसीही प्रभु के साथ स्वर्ग में रहेगा (फिलि. 3:20, 21)। इसलिये पौलुस के इन शब्दों को याद रखें, ''सो जब तुम मसीह के साथ जिलाएं गये तो, स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिने हाथ बैठा है (कुल. 3)।

पाप का दाम

सनी डेविड

आज मैं आप का ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूं कि पाप का दाम बड़ा ही विशाल है। यूं तो दुनिया में बड़ी-बड़ी कीमती चाजें है और कीमती मशीनें हैं; बहुमूल्य हीरे और सोने-चांदी की कीमती वस्तुएं है। लेकिन इन सब चीजों का दाम चुकाया जा सकता है। परन्तु पाप का दाम ऐसा विशाल है कि उसे कोई भी मनुष्य कभी भी पूरी तरह से नहीं चुका सकता। प्रभु यीशु ने एक बार कहा था कि, ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?'' (मत्ती 16:26)। यहां यीशु ने हमारे सामने एक ऐसा तराजू रखा है जिसके दोनों पलड़ों में दो अलग-अलग चीजें हैं। उसके एक पलड़े में तो जगत की सारी वे वस्तुएं हैं जिन्हें मनुष्य प्राप्त करना अपना सौभाग्य समझता है, यानि रुपया-पैसा, जमीन और जायदाद और मान-सम्मान और वे सारी वस्तुएं जिन्हें इंसान अपने सुख विलास के लिये हासिल करना चाहता है। और उस तराजू के दूसरे पलड़े में मनुष्य के वह प्राण या उसकी वह आत्मा है जिसे उसने अपनी सृष्टि के समय अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर से प्राप्त किया था। वह आत्मा जो इंसान का वास्तविक मनुष्य है, और जो मृत्यु के कारण मनुष्य के शरीर से अलग होकर अनन्तकाल में प्रवेश करके हमेशा के लिये वर्तमान रहेगा।

यहां प्रभु यीशु का प्रश्न बड़ा ही महत्वपूर्ण है। यीशु ने कहा था, कि पृथ्वी पर रहते हुए यदि कोई मनुष्य जगत की सभी वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है, यानि उसके पास एक बहुत अच्छी नौकरी या व्योपार है, या वह एक बड़ा अधिकारी या मंत्री बन जाता है। फिर उसके पास रहने का एक बहुत बढ़िया घर या बंगला है, मोटर-गाड़ियां, नौकर-चाकर और संसार की प्रत्येक वस्तु उसके पास है। परन्तु बात यह है कि कितने समय तक पृथ्वी पर रहकर वह मनुष्य उन सब वस्तुओं का उपयोग कर सकता है? क्योंकि एक समय निश्चित है जब वह मरेगा और इस संसार से हमेशा के लिये चला जाएगा। शायद साठ वर्ष बाद या अस्सी या सौ बरस बाद। परन्तु एक दिन अवश्य ही वह जाएगा। उस दिन उसका अधिकार या बड़ा ओहदा उसे नहीं रोक सकेगा; उस दिन उसका धन दौलत और जो कुछ भी जमीन पर उसने इक्ट्ठा किया था, कोई भी वस्तु उसे जाने से नहीं रोक सकेगी। और वह उन वस्तुओं का आनन्द उठाने के लिये फिर कभी वापस नहीं आएगा। वह उन सब चीजों को पृथ्वी पर हमेशा के लिये छोड़कर सदा के लिये इस जगत से चला जाएगा। और अब प्रश्न यह है, कि वह इस जगत से जाता है और अपने प्राण या अपनी आत्मा की हानि उठाता है, यानि पाप के कारण उसकी आत्मा नरक की उस पीड़ा में हमेशा के लिये प्रवेश करती है जहां हमेशा का रोना और दांतों का पीसना होगा, तो ऐसे इंसान को वास्तव में क्या लाभ होगा? जब वह इस जगत को छोड़कर जाएगा तो वह अपने साथ कुछ भी नहीं ले

जा पाएगा। वह यहां से एक निर्धन की तरह जाएगा। नरक से अपना छुटकारा करवाने को देने के लिये उसके पास कुछ भी नहीं होगा। हां, जब वह इस पृथ्वी पर था तो अपनी शक्ति और अपने धन और अधिकार के बल से वह बड़ी-बड़ी मुसीबतों से छूट जाता था। परन्तु वहां, उस अनन्तकाल में, उसके पास अपने छुटकारे के दाम में देने के लिये कुछ भी नहीं होगा। इसी कारण यीशु ने यह कहा था कि मनुष्य यदि सारे जगत को भी प्राप्त कर ले परन्तु अन्त में यदि वह अपनी आत्मा को खो दे तो उसे क्या लाभ होगा?

इस बात से हमें प्रभु की वह कहानी भी याद आ जाती है जिसका वर्णन हमें बाइबल में इन शब्दों में मिलता है कि, ''एक धनवान मनुष्य था जो बैजनी कपड़े और मलमल पहिनता था और प्रति-दिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था।'' और उन्हीं दिनों की बात है कि, ''लाजर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज पर जूठन से अपना पेट भरे वरन् कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया।'' और फिर कुछ समय के बाद, ''वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया। और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा। और उसने पुकारकर कहा, हे पिता इब्राहिम मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करें, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहा: हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं, परन्तु अब वह यहां शांति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है, कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहे, वे न जा सके, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। उसने कहा, तो हे पिता मैं तुझसे बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वह भी इस पीड़ा की जगह आएं। इब्राहीम ने उससे कहा, उनके पास तो मूसा और भविष्यक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुने। उसने कहा, नहीं हे पिता इब्राहीम पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए तो वे मन फिराएंगे।'' पर इब्राहीम ने, ''उस से कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यद्वकताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी वे उसकी नहीं मानेंगे।'' (लूका 16: 19-31)।

प्रभु यीशु द्वारा कहीं इस कहानी से यूं तो हम बहुतेरी बाते सीखते हैं, लेकिन एक बड़ी ही खास बात यहां से हम यह सीखते हैं कि पाप का दाम बड़ा ही विशाल है। उस अमीर आदमी के पास जमीन पर सुख विलास की हर एक चीज थी। हो सकता है कि उन चीजों को उसने अपनी ही मेहनत से हासिल किया हो, या हो सकता है कि उसने अपने पिता की सम्पत्ति को मीरास में पाया हो। पर उसके पास पृथ्वी पर बहुत कुछ था, और वह प्रतिदिन सुख-विलास के साथ रहता था। लेकिन उसने अपने

आत्मिक अस्तित्व को भुला दिया था। उसने इस बात की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया था कि एक दिन जब वह इस जमीन को और इस जमीन की सब चीजों को हमेशा के लिये छोड़कर चला जाएगा, तो वह जाकर कहां रहेगा? और क्या खाएगा और क्या पीएगा? और क्या पहिनेगा? उसने अपने जीवन में परमेश्वर को कोई स्थान नहीं दिया, उसकी मर्जी को जानकर उस पर चलने की कोई परवाह नहीं की। उसने अपनी जिंदगी ऐश और सुख-विलास के साथ ही बिता दी। और जब वह इस पृथ्वी पर से उठाया गया और उस जगह पहुंचा जहां उसे हमेशा के लिये रहना था, तब उसे होश आया कि वहां पहुंचने के लिये उसने कितनी बड़ी कीमत चुकाई है, उसने उस हमेशा के सुख को खो दिया जो उसे लाजर की ही तरह परमेश्वर के पास मिल सकता था। उसने पृथ्वी पर के नाश्मान भोजन को प्राप्त करने के लिये उस अनन्त भोजन और जीवन के जल को खो दिया जो उसे परमेश्वर के पास पहुंचकर मिल सकता था। और अब वह वहां, उस अनन्तकाल में पानी की एक-एक बूंद के लिये तड़प रहा था। पृथ्वी पर वह एक सुन्दर महल में रहता था, लेकिन अब वह आग की लपटों में पड़ा हुआ तड़प रहा था। उसकी पोशाक अब आग की लपटें थी, और उसे वह बदल नहीं सकता था। सो कितना विशाल है पाप का दाम, मित्रो, आज जब हम इस पृथ्वी पर जीवित है, हमें चाहिए कि हम अपने जीवनों को जाचें और परखें और देखें कि हम पृथ्वी पर अपना प्रति-दिन का जीवन किस तरह से व्यतीत कर रहे हैं। क्या हम अपना जीवन केवल वर्तमान के लिये ही व्यतीत कर रहे है? भविष्य के लिये, यानि अनन्तकाल के उस जीवन के लिये आज हम क्या कर रहे है, जिसमें एक दिन हम सब को अवश्य ही प्रवेश करना पड़ेगा?

प्रभु यीशु ने ने एक बार कहा था, कि तुम अपने लिये पृथ्वी पर धन इक्ट्ठा न करो। जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इक्ट्ठा करो जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर न तो सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तुम्हारा धन होगा वहीं तुम्हारा मन भी लगा रहेगा। (मत्ती 6:19-21)। और एक अन्य जगह यीशु ने इस प्रकार कहा था, कि नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये परिश्रम करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है। (यूहन्ना 6:27)।

आज यदि आप को वास्तव में अपने जीवन को बचाने की चिंता है। यदि आप वास्तव में अपने भविश्य के लिये चिंतित हैं। यदि आप भविश्य में आने वाले अपने हमेशा के जीवन को सचमुच में सुरक्षित करना चाहते है, तो इसका केवल एक ही उपाय है। और वह यह है, कि आप और हर एक इंसान परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में अपना विश्वास लाए और उसकी आज्ञा को मानकर अपने सब पापों से मन फिरा ले और बपतिस्मा लेकर यीशु का एक अनुयायी बन जाए, और उसमें होकर उसका सा जीवन व्यतीत करें। क्योंकि यीशु ने परमेश्वर की बात मानकर क्रूस के ऊपर अपनी मृत्यु के द्वारा हम सब के पापों का दाम चुका दिया है। वह हमारे पापों का प्रायश्चित हैं उसमें होकर हम पापी से पवित्र और अधर्मी से धर्मी बन जाते हैं। क्या आज आप अपने प्रत्येक पाप से मन फिराकर उसके पास आएंगे?

हम यहाँ क्यों हैं?

जे. सी. चोट

आज हम यह देखना चाहते हैं कि हम यहां पृथ्वी पर क्यों है? आप कौन हैं? यहां से आप कहां जाएंगे? क्या आप जानते हैं कि आज बहुत से लोग इस बात का जवाब नहीं दे पाते। वे यह नहीं जानते कि वे कहां से आये हैं और इस जीवन के बाद कहां जाएंगे? लोग यहां हैं पर यह नहीं जानते कि इस जीवन के बाद क्या होगा?

अब बहुत से लोग ''ऐवूलूशन'' या विकासवाद में विश्वास करते हैं। वे सोचते हैं कि एक छोटे से कण से जीवन की शुरूआत हुई थी तथा बहुत से ऐसा सोचते हैं कि मनुष्य का विकास बंदर से हुआ है। मनुष्य इस बात में इतना मूर्ख हो सकता है हम यह सोच भी नहीं सकते। क्या आप ऐसा कभी सोच सकते हैं कि आपका विकास बंदर से हुआ है? एक और थ्योरी संसार में प्रचालित हो रही है कि एक बहुत बड़ा धमाका हुआ था जिसे बिग बैन्ग थ्यौरी कहते हैं और उस धमाके से पृथ्वी पर यह जीवन आरंभ हुआ था। यह सब बड़ी मूर्खता की बात लगती है। जब हम परमेश्वर की ओर ध्यान लगाते हैं तब हमें सच्चाई का पता चलता है। इस बात में तर्क लगता है कि सृष्टि की उत्पत्ति तथा मनुष्य की रचना परमेश्वर द्वारा हुई थी। आज लोग अपने में सोचकर ही परेशान है।

कुछ वर्ष पहले एक व्यक्ति जो कि अमेरिका का रहने वाला था। वह व्यक्ति अफ्रीकन था तथा वह अपने में विचार करने लगा कि हम जो काले लोग हैं हमारी उत्पत्ति कैसे हुई और उसने बहुत सारे सबूत इक्ट्ठे किये तथा यह नतीजा निकाला कि उसके पूर्वज अफ्रीका में गामबिंया देश से आये थे। यह तब की बात है जब अफ्रीका से गुलामों को अमेरीका देश लाया जाता था। इसी प्रकार से कई लोग अपने पूर्वजों का पता लगाने के लिये कई बातों का पता लगाते हैं।

यह बहुत अच्छा है कि अपने पूर्वजों के विषय में जानकारी प्राप्त की जाये परन्तु ऐसा करते-करते हम आदम और हव्वा तथा नूह तक पहुंच जाते हैं। क्योंकि आदम और हव्वा से इंसान की उत्पत्ति हुई। क्योंकि वे परमेश्वर की ओर से आये थे। (उत्पत्ति 1:26, 27)।

जबकि हम बाइबल का अध्ययन करते हैं तो हम देखते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी महिमा के लिये बनाया था। वह चाहता था कि जिस मनुष्य को उसने बनाया है वह अदन की बाटिका में प्रसन्न रहे। उसने उनकी प्रत्येक आवश्यकता को पूरा किया था। वहां जीवन के वृक्ष को भी रखा गया था। परमेश्वर ने उनके ऊपर कोई दबाव नहीं डाला कि वे उसकी सेवा या उपासना करें। बल्कि उनके पास एक चुनाव था। इसलिये परमेश्वर ने उनसे कहा था कि वृक्ष का प्रत्येक फल तुम खा

सकते हो परन्तु भले और बुरे ज्ञान वाले वृक्ष का फल मत खाना। उनसे कहा गया था कि जिस दिन वे यह फल खाएंगे वे मर जाएंगे। और आगे की कहानी हम जानते हैं कि शैतान के बहकावे में आकर उन्होंने उस फल को खाया। शैतान ने हव्वा से कहा था कि आप यह फल खा लो कुछ नहीं होगा। परन्तु परमेश्वर जानता था कि ऐसा करने से उसका परिणाम क्या होगा? उसने फल खुद तो खाया परन्तु साथ ही अपने पति को भी दे दिया। और इस प्रकार से परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर वे पापी बन गये। आत्मिक रूप से उनकी मृत्यु हो चुकी थी। उन्हें अदन की वाटिका से निकाल दिया गया था (उत्पत्ति 2 तथा 3)।

फिर बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस संसार में इसलिये भेजा ताकि उन्हें उनके पापों से मुक्ति दिला सके। यीशु इस संसार में आया तथा क्रूस पर उसने अपना बलिदान दिया। यह बलिदान उसने सारे जगत के लिये दिया था। ऐसा करके उसने मनुष्य के लिये यह संभव कर दिया कि वह परमेश्वर के पास आ सके। और तमाम उन आशिषों को प्राप्त कर सके। जो परमेश्वर अपने बच्चों को देना चाहता है। मत्ती मरकुस, लूका तथा यूहन्ना की पुस्तकों में हम यह पढ़ते हैं।

इब्रानियों का लेखक इस प्रकार से लिखता है, ''पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे। क्योंकि जिस के लिये सब कुछ है, और जिस के द्वारा सब कुछ है उसे यही अच्छा लगा कि जब यह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाएं तो उनके उद्धार के कर्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे। क्योंकि पवित्र करने वाला और जो पवित्र किये जाते है, सब एक ही मूल से है। इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता (इब्रानियों 2:9-11)। प्रेरित यूहन्ना लिखता है, ''देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया, कि हम परमेश्वर की संतान कहलाएं और हम हैं भी इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना। हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की संतान है, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे। परन्तु इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है'' (1 यूहन्ना 3:1-3)।

परन्तु हम कैसे जान सकते हैं कि हम परमेश्वर की संतान हैं? हम यह परमेश्वर के ऊपर विश्वास करके जान सकते हैं। यह विश्वास करके कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। और पानी में बपतिस्मा लेकर ताकि हमारे सब पाप यीशु के लोहू में धुल सकें (यूहन्ना 14:1-3, प्रेरितों 2:38; मत्ती 10:32 तथा प्रेरितों 22:16)। आगे प्रेरित पौलुस कहता है ''और तुममें से जितनों ने भी मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। (गलतियों 3:27)। बपतिस्मा

हमें मसीह में लाता है तथा हमें परमेश्वर की संतान बनाता है। तथा हमें देह यानि कलीसिया में मिलाता है। (1 कुरि. 12:13)। प्रेरितों 2:47 में लिखा है कि प्रभु हमें कलीसिया में मिलाता है।

सो, हम कौन हैं? शारीरिक रूप से देखें तो हम अपने पूर्वज आदम और हव्वा को तथा परमेश्वर को देखते हैं जिसने हमें बनाया है। आत्मिक रूप से जब हम परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं तब हमारा उद्धार होता है तथा हम मसीह की कलीसिया में प्रभु द्वारा मिला दिये जाते हैं। हमारा नाम मसीही होता है और हम मसीही नाम से जाने जाते हैं। (प्रेरितों 11:26)। हमारे पास अनन्त जीवन की आशा होती है। हमें मृत्यु तक विश्वास योग्य बनकर रहना है। (प्रकाशित 2:10)।

अपने आपको शिष्टतापूर्वक और विचारशीलता से सजाओ (1 पतरस 3:1-7)

डुएन वार्डन

भक्त स्त्रियों के उदाहरण (3:5, 6)

पतरस को उदाहरण की सामर्थ का पता था। रूखे स्वामियों के दुर्व्यवहार और गाली-गलौज से खीजने की परीक्षा में पड़े दासों को निर्देश देते हुए उसने मसीह के नमूने की ओर ध्यान दिलाया। प्रभु ने अन्याय को सहा था। जिस प्रकार पतरस के द्वारा प्रभु के उदाहरण से दासों को निर्देश मिला वैसे ही बीते समय की पवित्र स्त्रियों से भी। पतरस ने उनके विषय में कहा कि वे अपने आपको मन की दीनता और नम्रता से सजाती, परमेश्वर में आशा रखती थी और इस प्रकार उन्होंने अपने आप को बहुत सुन्दर बना लिया था। इसके विपरीत उसने कहा कि उन्होंने गहने पहनने, वस्त्र पहनने और बाल गूंथने में अपनी सुन्दरता को नहीं देखा था।

वास्तव में भक्त स्त्रियों के बारे में बाइबल बहुत कुछ कहती है। सारा, रिबका, लिआ, और राहेल अपने पतियों के घुमक्कड़ जीवनों में उनके साथ थी और उनके साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा रखती थी। इब्रानियों 11:11 की भावना से बहस करते हैं, चाहे अन्य अनुवादों में वचन से जुड़ी अलग-अलग समस्याएं खड़ी होती है: "विश्वास से ही सारा ने गर्भधारण करने की सामर्थ पाई, और उम्र बीत जाने पर बच्चे को जन्म दिया, क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करने वाले को विश्वासयोग्य पाया।" सारा के बाद, रिबका ने प्रतिज्ञा की हुई संतान के लिए याकूब का समर्थन किया। बाद में याकूब की पत्नियों ने अपने पिता से बढ़कर अपने पति का समर्थन किया जब इस पुरखा ने उनके जन्म की भूमि को छोड़कर कनान को जाने का निर्णय लिया (उत्पत्ति 31:14-17)।

मूसा की बहन मरियम हारून के साथ मिस्र से इस्राएल के निकलने के समय अगुआ थी। यरीहो की वेश्या रहाब ने जासूसों के कनान में प्रवेश करने पर इस्राएल

की सहायता की। उसका नाम विश्वासी लोगों की सूची में ही नहीं (इब्रानियों 11:31) बल्कि प्रभु की वंशावली में भी पाया जाता है (मत्ती 1:5)। न्यायियों में दबोरा सबसे उत्कृष्ठ लोगों में से थी। न्यायियों 5 में उसका गीत पुराने नियम के इतिहास में सब विवरणों में से एक था। रूत और नाओमी का प्रेम और समर्पण, अबिगैल की समझ और बुद्धि (1 शमूएल 25) एस्तेर का साहस और विश्वास सब पुराने नियम में अपने लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार की कहानी का भाग है।

विश्वासी और समर्पित स्त्रियों की कहानी पुराने नियम के साथ ही खत्म नहीं होती। मरियम और एलिशबा से दोरकास और प्रिसकिल्ला, नये नियम में भक्त स्त्रियों के विश्वास और काम जारी रहते हैं। विश्वासी लोगों का शक्तिशाली दल ही था जिसे पतरस ने यह कहते हुए मसीही पत्नियों के सामने उठाया, "पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं अपने आपको इसी रीति से संवारती" थी (3:5)। अपने पतियों के प्रति समर्पण इन पवित्र स्त्रियों की विश्वासयोग्यता का एक भाग था। बिना दाम के अधीन होने से इसका मोल कम नहीं हो जाता। सारा तो यहां तक बढ़ गई कि वह अपने पति को आदर से बुलाती थी। जब मसीही स्त्रियां अपने पतियों के अधीन होती हैं, तो वे सारा जैसे विश्वास से उसकी आत्मिक पुत्रियां बन जाती हैं।

विचार करने और सम्मान का पौरुष (3:7)

सही ढंग से इस्तेमाल होने पर बाइबल का निर्देश पाठक के मन को टटोलकर उसके जीवन को बदल डालेगा। तब कोई किसी को नीचा दिखाने और दोष लगाने के लिए वचन का काम करता है तो वह बुरी तरह से बहुत दूर चला जाता है। हाल ही में मैं एक बाइबल क्लास में था, जिसमें चर्चा का विषय साकूब 2 पर और सम्बंध, विश्वास तथा कामों पर आधारित था। क्लास की एक सदस्य ने कलीसिया के उस सहायता को प्रदान न कर पाने पर इसे डांटने के लिए कई मिनट ले लिए जो उसे लगता था कि दी जानी चाहिए थी। मैं उस स्थिति के बारे में कुछ जानता था। वास्तव में दयालु लोगों ने काफी सहायता और प्रयास किया था, जिसके लिए उन्हें बुरा भला भी कहा गया और किसी ने उनकी तारीफ नहीं की। कलीसिया नाकाम भी हो जाए (जैसे कि कई बार होता है, मनुष्यों द्वारा बनी होने के कारण) बाइबल की शिक्षा का उद्देश्य दोष लगाना नहीं है। हम में से हर एक को इसे अपने लिए लागू करना चाहिए। प्रश्न यह नहीं है कि "मुझे किसने नाकाम किया?" बल्कि यह है कि "मैं कहां नाकाम हुआ हूँ, और प्रभु के कार्य में और उपयोगी सेवक बनने में यह वचन मेरी सहायता के लिए मुझे कैसे पहुंचा सकता है?"

पतियों और पत्नियों को स्वयं की जांच वाले मन के साथ 3:1-7 पढ़ना चाहिए। पत्नी के लिए पढ़ा जाने वाला भाग 3:1-6 है जिसमें वह पूछ सकती है कि वह प्रेरित के निर्देश का पालन करके और भक्तिपूर्ण जीवन कैसे बिता सकती है। पति के लिए पढ़ने वाला भाग 3:7 है जिसे पढ़कर वह अपने आपसे पूछ सकता है कि क्या उसके कार्य प्रेरित की बात से मेल खाते हैं जो उसने पतियों को करने के लिए कहा है। यदि वह पहली आयतों का इस्तेमाल अपनी पत्नी को डांटने के लिए करता

है या यदि उसकी पत्नी आयत 7 का इस्तेमाल यह साबित करने के लिए करती है कि वास्तविक समस्या उसका पति है तो इस वचन का दुरुपयोग हो चुका है। आखिर वह अच्छा पति कैसे हो सकता है जब उसकी पत्नी इतनी कठोर हो, और वह अच्छी पत्नी कैसे हो सकती है जब उसे ऐसे अप्रिय व्यक्ति के साथ रहना पड़ रहा हो? ऐसी चालाकियों का इस्तेमाल करना इस बात को सुनिश्चित करता है कि इसमें से किसी को कुछ लाभ नहीं।

पति का अपनी पत्नी के साथ व्यवहार के ढंग पर प्रेरित के निर्देश को तीन व्यवहारों से संक्षिप्त किया जा सकता है। यह सत्य है कि पौलुस ने पति के कर्तव्यों के लिए केवल एक छोटा सा भाग लिया है, परन्तु वह वैसा ही पति है जो वहां दिए गए गुणों वाला पति हो सकता है।

समझना: मुझे स्थानीय पुस्तकों की दुकान में पुस्तकें ढूंढ़ना अच्छा लगता है। कई बार मै "मनोविज्ञान" वाले भाग में चला जाता हूँ जिसमें विवाह और परिवार के सम्बंधों पर पुस्तकें होती हैं। हैरानी की बात है कि ऐसी कितनी पुस्तकें प्रिंट हो चुकी है। सफलता के लिए हर किसी का अपना फार्मूला है। दर्जनों प्रकाशनों द्वारा सैक्स पर पुस्तकें छापी जाती हैं और सम्भवतया उनकी बिक्री सबसे अधिक होती है। इन सब पुस्तकों, सेमिनारों, जागरूक करने वाली कांफ्रैन्सों के बावजूद एक स्थिर, पारम्परिक संतुष्टि देने वाला परिवार बनाने की परिपक्वता तथा समझ इतने कम लोगों को क्यों है? मैं बताता हूँ कि नाकाम रहने वाले अधिकतर दम्पत्तियों में मुझे कौन सी बात की कमी लगती है। मुझे जिस बात की कमी लगती है वह है समझ। समझ के लिए सभी संभव छोटी-छोटी बातों को शामिल करने का कोई फार्मूला नहीं है।

संक्षेप में एक पति के लिए अपनी पत्नी को समझने का अर्थ है: "जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे लिए करे वही तुम उसके लिए करो।" समझने का अर्थ जन्मदिन को याद रखना, फूल देना, कूड़ा फैंककर आना और शिकायत सुनना, गलती को नजरअंदाज करना, अंतिम बार हार मानने पर हार मानना, घर के कामकाज में सहायता करना और हजारों अन्य बातें। समझने का अर्थ कई बार उसकी इच्छा के आगे समर्पण करना भी हो सकता है।

आदर: मैनें कई अवसरों पर मिले एक प्रचारक को उन व्यवहारों पर बात करते सुना है जिनसे मजबूत घर बनते हैं। वह कुछ इस प्रकार कहता है: "हे पिताओ, क्या आप जानते हैं कि अपने नन्हें लड़कों और लड़कियों को आप सबसे कीमती उपहार क्या दे सकते हैं? आप उनकी मां से प्रेम करो। उससे अपने पूरे मन से प्रेम करो।" मैं मानता हूँ कि वह सही था। जिससे आप प्रेम करते हैं और जिसे आप केवल शारीरिक रूप से चाहते हैं उसमें एक बात का अंतर हो सकता है कि जिससे आप प्रेम करते हैं आप उसका आदर भी करेंगे। पत्नी का आदर करने का अर्थ उसके विचारों को महत्व देना और उसकी सलाह मांगना है। जब उसे बताए जाने की

आवश्यकता हो कि वह अच्छी, भली और दयालु स्त्री है तो उसके कार्य और समर्थन की सराहना करना आवश्यक है। पत्नी का आदर करने का अर्थ उसके साथ वित्तीय योजना बनाकर काम करना, जब आपको देर रात तक काम करना पड़े तो उसे सूचित करना और एक विश्वासपात्र के रूप में उसके साथ बांटना। आदरयोग्य होने का अर्थ विचारवान और दयालु होना है।

सहभागिता: पतरस ने कहा कि पति अपनी पति के साथ सहभागी ("पात्र", आयत 7) के रूप में और "अनुग्रह के जीवन" में साझी वारिस के रूप में व्यवहार करें। यदि मैं गलत नहीं हूं, तो "सहभागी" में मित्रता के विचार को शामिल करता है। सहभागी लोग मित्र भी होते हैं। यह सत्य है कि सहभागियों में जिम्मेदारियां और समर्थन एक दूसरे को बांटा जाता है। यह सत्य है कि उनकी समृद्ध और उनके कठिन समय दोनों पर एक समान आते हैं। सहभागिता को सहने से स्पष्ट और कोई बात नहीं हो सकती, चाहे उस ढंग से बढ़कर है जिसमें यह घनिष्ठ और अन्त तक चलने वाली मित्रता को बनाता है। पत्नियों को अपने पतियों से सहभागियों की तरह व्यवहार करना चाहिए।

यह आश्चर्य की बात है कि पतरस ने "सैक्स" शब्द का एक बार भी इस्तेमाल किए बिना मजबूत और स्थाई शादी तथा घरों को बनाने की ऐसी ठोस सलाह दी है। पति और पत्नी के बीच शारीरिक सम्बंध आवश्यक हैं, परन्तु स्पष्टतया पतरस ने इसे अच्छे उपदेशों की घेराबंदी के रूप में देखा, जो उसने मसीही पतियों और पत्नियों को दिया।

भविष्य के लिए शांति

(यूहन्ना 14)

ऍंडी क्लोर

"ये बातें मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं। परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। मैं तुम्हें शांति दिए जाता हूँ, अपनी शांति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे। तुमने सुना, कि मैंने तुम से कहा, कि मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आया हूँ: यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूँ क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। और मैंने अब इस के होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो। मैं अब से तुम्हारे साथ बहुत बातें न करूंगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ में उसका कुछ नहीं। परन्तु यह इसलिए होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूँ, और जिस

तरह पिता ने मुझे दी, मैं वैसे ही करता हूँ: उठो, यहां से चलें" (आयतें 25-31)

अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले गुरूवार रात को अटारी वाले कमरे में प्रेरितों के साथ यीशु ने उनसे तसल्ली की बातें की जिससे उन्होंने अपने ऊपर आने वाले अंधकार के लिए तैयार होना था। ये बातचीत उनके लिए अत्यंत महत्व की थी और टिकाऊ भी, जैसे हमारे लिए भी है। हम उन शिक्षाओं को कैसे संभालते हैं जो उसने उन्हें उनके "साथ रहते हुए" (14:25) दी थीं। उन्हें उसकी बातें उन आवश्यकताओं पर सर्चलाइट की तरह चमकती लगती हैं जब हम अपने आगे वाले हर कल के लिए रास्ता बनाते हैं।

आत्मा का नेतृत्व

प्रेरितों के काम के लिए अगुआई आवश्यक है। यीशु ने उन्हें समझाया कि पिता उनकी सहायता के लिए पवित्र आत्मा को भेज रहा है। पवित्र आत्मा के विषय में यह नये नियम की सबसे बड़ी प्रतिज्ञाओं में से एक है। यह संक्षेप में इस बात का वर्णन करता है कि पवित्र आत्मा ने क्या करना है। यीशु ने कहा, "परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा" (14:26)। पिता इस सहायक को यीशु के नाम में भेजने वाला है। उसका उद्देश्य मसीह के काम को महिमा देने और बढ़ाना था। उसने दो महत्वपूर्ण तरीकों से अर्थात् नये प्रकाशनों के द्वारा उन्हें "सब बातें" सिखाकर और जो कुछ यीशु ने उन्हें पहले सिखाया था उसे याद दिलाकर, प्रेरितों की सहायता करनी थी। उसने उस नींव पर बनाने में जो मसीह ने पहले रखी थी, प्रेरितों की अगुआई करनी थी।

पवित्र आत्मा का आना हमारे लिए भी दिया गया। प्रेरितों और परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य लेखकों के द्वारा पवित्र आत्मा ने हमें पवित्र शास्त्र दिया। पिन्तेकुस्त के दिन स्वर्ग से प्रेरितों के ऊपर पवित्र आत्मा बहाया गया। आत्मा की उपस्थिति में इस बपतिस्मे से प्रेरितों को संसार में परमेश्वर की इच्छा प्रगट करने, अन्य मसीही लोगों को आश्चर्यकर्म करने के दान देने और पुष्टि के लिए आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी। उसके उनके साथ रहने में जो कुछ प्रेरितों के लिए पवित्र आत्मा था वही हमारे लिए है जब हम परमेश्वर के वचन में उसके प्रकाशन की सामर्थ और सच्चाई में रहते हैं।

शांति की खामोशी

स्वाभाविक है कि ऐसे अंधकार भरे भविष्य की राह देखते हुए प्रेरित अपने मनों में शांति की खोज में थे। यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें इसे दूंगा।" "मैं तुम्हें शांति दिए जाता हूँ, अपनी शांति तुम्हें देता हूँ, जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता, तुम्हारा मन न घबराए और न डरे" (14:27क)। शांति उलझन और गड़बड़ी के बीच स्थिरता है। यीशु ने इन लोगों को धैर्य दिए बिना नहीं छोड़ना था। यह शांति जो उसने उन्हें दी वह सच्चाई की शांति थी, अर्थात् वह स्थिरता जो इस बात को जानने से मिलती है कि क्या हो रहा है। उसने उन्हें यह शांति न केवल अपनी विदाई से पहले अपनी बातों

के द्वारा दी, बल्कि अगले दिनों में उनके साथ अपनी उपस्थिति के द्वारा भी दी। "तुम ने सुना, कि मैं ने तुम से कहा, कि "मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आया हूँ" (14:28क)। उन्होंने शीघ्र ही एक आत्मिक उपस्थिति के रूप में मसीह को जान लेना था। बाद में उसने उनके साथ एक नये तरीके से होना था।

जो शांति वह छोड़ रहा था और वह शांति जिसे उसने देना था वैसी शांति नहीं है जो संसार की ओर से मिलती है। संसार जो शान्ति देता है वह केवल हानि या परेशानी से मुक्ति है, और यह बार-बार ऐसी शांति तभी मिलती है जब सब परिस्थितियों सही हों और कई बार तो तब भी नहीं। प्रेरितों को यीशु की शांति गड़बड़ी के दौरान ही मिलनी थी।

यीशु आज भी लोगों को शांति देता है। वह अपने चेलों को शांति देता है। यह शांति वह तब देता है जब हम विश्वास और आज्ञापालन में उसके पास आते हैं। बाद में परीक्षाओं के हमें परेशान करने पर वह हमें अपनी उपस्थिति के द्वारा नई शांति देता है। प्रेरितों ने मसीह की शारीरिक संगति के बिना आने वाले भविष्य को देखा। इस आकृति ने उन्हें डरा दिया। उनका संसार टूटी हुई आशाओं और निराश करने वाली योजनाओं के ढेर में ढहता हुआ लगा। उनके परेशान मन शांति के लिए पुकार उठे और यीशु ने उन्हें शांति दी। उसने कहा, "तुम्हारा मन न घबराए और न डरे" (14:27ख)। वह समझा रहा था, "मैं भविष्य के बारे में सब कुछ जानता हूं। मैं जानता हूँ कि इसमें क्या होने वाला है और मैं इसमें तुम्हारी अगुआई करूंगा।"

विश्वास और भरोसा

भविष्य ने विश्वास के लिए भी पुकारा। बड़ी-बड़ी बातें हो रही थीं पर प्रेरितों को उनका अर्थ समझना था। यीशु ने उन्हें बताया:

तुमने सुना, कि मैंने तुम से कहा, कि मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आया हूँ: यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात में आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूँ क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। और मैंने अब इसके होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीत करो (14:28, 29)।

सच्चा विश्वास मसीह की बातों पर पक्का होता है (रोमियों 10:17)। यह केवल उन्हें ही मिलता है जो उसकी बातों को सुनते, उन्हें मानते और भरोसे और प्रेम में उन पर कार्य करते हैं।

व्यक्तिगत रूप में प्रेरित जिन्होंने मसीह की बातों को माना था, उनसे मसीह की विदाई में आनन्दित हो सकते थे। वे संसार के लिए परमेश्वर की बड़ी योजना के एक और चरण में उसके प्रवेश होने पर आश्वस्त हो सकते थे। वह पिता के पास लौट रहा था। पृथ्वी की अपनी सेवकाई को पूरा करने की अपने पिता की इच्छा को पूरी करने के बाद, उसने पिता के दाहिने हाथ अपना स्थान ग्रहण करके सनातन मंशा को जारी रखना था। प्रेरित उन्हें कहे गए उसके शब्दों से इस विदाई को मान गए थे। उसने उन्हें आश्वस्त किया, "और मैंने अब इसके होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो।(((14:29)

हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना और इन

प्रेरितों के लिए कितना जमीन हिला देने वाला अनुभव हो सकता है। इस बड़ी त्रासदी को ध्यान में रखते हुए, यीशु ने हमें बताया:

मैं अब से तुम्हारे साथ बहुत बातें न करूंगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझमें उसका कुछ नहीं। परन्तु यह इसलिए होता है कि संसार जाने की मैं पिता से प्रेम रखता हूँ, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूँ: उठो, यहां से चलें (14:30, 31)।

यीशु के इन बातों के कहते हुए भीड़ शैतान अर्थात "संसार के हाकिम" के चलाए इक्ट्ठी हो रही थी। उसकी पेशियां, कोड़े मारे जाना और मृत्यु होने में केवल कुछ घण्टे थे।

यीशु ने प्रेरितों को याद दिलाया कि सबसे बड़े युद्ध का चरम निकट आ रहा है। अपने आपको क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए देकर, निर्दोष मसीह ने क्रूस को एक वेदी में बदलकर संसार के पापों के लिए बलिदान का मेमना बन जाना था। इन घटनाओं के लिए यीशु की पहुंच से हर किसी को उस प्रेम का पता चलना था जो उसके मन में पिता केलिए था। उसने पहले अपने पिता की इच्छा के प्रति समर्पित होने के कारण क्रूस के लिए अपने आपको दे दिया। उसे अपने पिता से एक आज्ञा मिली थी, और वह उसे मानने को दृढ़संकल्प था।

प्रेरितों ने चेतावनी दी थी कि उनके मरने के बाद लोग सच्ची मसीहीयत से फिर जाएंगे

चार्ल्स स्कॉट

पतरस ने (2 पतरस 1:3), यूहन्ना ने (1 यूहन्ना 4:6) और पौलुस ने चेतावनी दी थी (प्रेरितों 20:29)।

जब सभी प्रेरित मर गए, तो इतिहास हमें बताता है कि लोग भी सत्य से फिर गए। कुछ लोगों ने झूठा दावा किया कि परमेश्वर ने उन्हें अधिकार दिया है और वे कलीसिया के प्रबंध में परिवर्तन कर सकते हैं। सो उन्होंने शिक्षा, आराधना और कलीसिया के संगठन को बदल दिया। उन्होंने कई बिशपों के ऊपर एक आर्चबिशप को रख दिया। कई साल बीत जाने के बाद उन्होंने आर्च-बिशपों के ऊपर कार्डिनल लगा दिया। फिर कई साल बीत जाने के बाद उन्होंने कार्डिनलों के ऊपर पोप लगा दिया और कहा कि अब पोप पूरी कलीसिया का मुखिया है। नये नियम को पढ़ने वाला हर व्यक्ति जानता है कि इसमें आर्च-बिशपों, कार्डिनलों या पोप का कोई उल्लेख नहीं है। नये नियम की शिक्षा से फिरकर रोमन कैथोलिक चर्च बनने में सदियां लग गई। पोप बनने के बाद तो ये परिवर्तन बड़ी तेज़ी से हुए।

मसीह के मार्ग से यह बड़ा हटाव, जिसकी भविष्यवाणी प्रेरितों ने की थी, पूर्व के मसीहियों को भी प्रभावित करने वाला था। उन्होंने नये नियम की सादगी भरी

मसीहियत से भी कई बातें निकाल दी। उन्होंने कलीसिया के संगठन में पुरोहित-तंत्र भी जोड़ दिया। उनका दावा था कि कॉन्सटेंटीनोपल का पुरोहित तंत्र इस पर मुख्य अधिकारी या कम से कम कलीसियाओं की ओर से सब से अधिक सम्मानित होना चाहिए। पूर्व में आए इन परिवर्तनों से ईस्टर्न ऑर्थोडॉक्स कलीसियाएं बन गई।

सदियों से ऐसे अनेक परिवर्तनों के बाद, तेरहवीं से सत्रहवीं शताब्दी में कई गंभीर सोच वाले लोग अर्थात् वे सुधारक उठे, जिन्होंने उन परिवर्तनों को देखकर लोगों से कुछ करने को कहा। कई गलत शिक्षाओं को सुधारने के लिए उन्होंने अपने साथ कई लोगों को लिया। "प्रोटेस्टंट सुधारवाद" कहा गया। इस सुधारवादी प्रयास से कई डिनोमिनेशन अर्थात् साम्प्रदायिक कलीसियाएं बन गईं, जो मसीही एकता के लिए मसीह की प्रार्थना और विनती के बिल्कुल विपरीत है। (यूहन्ना 17)

अपने विश्वास के अनुसार व्यवहार करना (याकूब 1:19-27)

बिल हूटन

सुलैमान ने सभोपदेशक 6 का आरंभ इन गंभीर शब्दों के साथ किया, "एक बुराई जो मैंने धरती पर देखी है, वह मनुष्यों को बहुत भारी लगती है" (सभोपदेशक 6:1)। ऐसा लगता है कि हमारे ध्यान का आरंभ इन शब्दों क साथ करना उपयुक्त हैं, मसीह की देह के भीतर पाप इस समय भी है और याकूब के समय से ही है। इस बुराई ने हमारे आस-पास के संसार में हमारे प्रभाव को प्रभावित किया है। यह उन लोगों पर हमारे प्रभाव को कम करके नाकारा कर देता है, जिन्हें हम जानते हैं। यह पति और पत्नी क बीच तलाक की समस्या नहीं, बल्कि शिक्षा और व्यवहार के बीच अर्थात् हमारे सुनने और करने के बीच की, यानी जो हम विश्वास करते और जैसे हम विश्वास करते हैं उसके बीच की समस्या है। याकूब ने परीक्षाओं तथा प्रलोभनों की समस्याओं से पहल ही दो-दो हाथ कर लिए हैं, परन्तु अब वह अपनी पत्री के मूल विषय का विस्तार देता है: विश्वास से हमारे जीवन तथा कार्य करने के ढंग में अंतर आता है।

जब हम उन लोगों को देखते हैं कि किसी बात पर विश्वास करते हैं परन्तु पूरी तरह से किसी अलग बात को कर रहे होते हैं, तो हम आम तौर पर उन्हें कपटी कहते हैं। कोई नहीं बता सकता कि क्यों, पर लगता है कि धर्म में "कपट" सबसे अधिक बार मिलता है। लगभग हर व्यक्ति किसी न किसी को जानता है, जो रविवार के दिन कलीसिया की सभाओं में आता और हर प्रकार से भाग लेता है, परन्तु सप्ताह के अन्य शेष दिनों में उसका जीवन पाप से भरा रहता है। यीशु ने लोगों से कहा (लूका 6:46) कि अपने जीवनों में किसी प्रकार की आज्ञा माने बिना होठों से दावा करना केवल कपट है।

याकूब की पुस्तक स्पष्ट कर देती है कि वास्तविक विश्वास से हमारे जीवनों में हमारी सोच, हमारे व्यवहार, हमारी आशा, हमारी आदतों और मित्र चुनने की हमारी पसंद आदि में बदलाव आता है। आत्मिक होने के हमारे दावों का कोई अर्थ नहीं है; महत्व इस बात का है कि हमारे जीवनों का नियंत्रण प्रभु की इच्छा के आगे सौंपा गया है या नहीं।

1:19-27 में याकूब के द्वारा पवित्र आत्मा तीन क्षेत्रों की बात बताता है, जिनमें विश्वास से हमारे जीवन के ढंग में फर्क पड़ना चाहिए।

स्वभाव और जीभ (1:19, 20)

अपने क्रोध और अपनी जीभ को काबू में रखने की व्यक्ति की योग्यता यह दिखाने का सबसे बढ़िया टेस्ट है कि उसका विश्वास और उसका जीवन साथ-साथ चलते हैं। क्या आप अपने क्रोध पर काबू पा सकते हैं? क्या आप जानते हैं कि अपनी जीभ को कब काबू में रखना है? एक व्यक्ति जो अपने क्रोध या तेज ज़बान के लिए प्रसिद्ध है मसीही के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाएगा नहीं। इसीलिये याकूब कहता है, "हे मेरे भाइयों यह बात तुम जानते हो, इसलिए हर एक मनुष्य सुनने के लिए तत्पर और बोलने में धीरा और क्रोध में धीमा हो। क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता" (याकूब 1:19, 20)।

याकूब इन सब खूबियों को एक ही परिस्थिति में बांध रहा है। आपने किसी व्यक्ति को नाराज होते और बातें आरंभ करते कितनी बार देखा है जबकि उसे सुन रहे होना चाहिए? यह असफलता धार्मिक संदर्भ होने पर विशेष महत्व रखती है। सदियों से मसीही लोग मजाक और व्यंग्य के पात्र बने रहें हैं और उन्होंने हमेशा मसीह जैसे ढंग से उत्तर नहीं दिया। कलीसिया की बहाली की हमारी अपनी लहर की बात करें और उस आलोचना पर विचार करें जो आमतौर पर उसकी होती है। आलोचना होने पर हम कैसे प्रतिक्रिया देते है।? क्या इससे हम नाराज हो जाते हैं और "उन्हें सबक सिखाने" की परीक्षा में पड़ते है? "सीटी खोलना" और "भाप निकालना" स्वाभाविक और आसान बात लग सकती है पर यह सही बात नहीं है। याकूब कहता है कि यदि हमारे विश्वास से सचमुच फर्क पड़ता है तो हम "बोलने में धीरे और क्रोध में धीमे" होंगे (1:19)।

मस्तिष्क और मन (1:2)

जब सुससमाचार सुनाया जाता है तो अलग-अलग प्रतिक्रियाएं आती हैं। ऐथंस के दार्शनिकों ने "ठट्ठा" किया (प्रेरितों 17), परन्तु पिन्तेकुस्त के दिन तीन हज़ार लोगों ने सुसमाचार को ग्रहण करके इसकी आज्ञा मानी (प्रेरितों 2)। "शुभ समाचार" सुनाने पर ऐसा अन्तर क्यों? अन्तर सुसमाचार में नहीं; बल्कि जैसे अलग-अलग प्रकार की मिट्टी वाले दृष्टांत में यीशु ने समझाया (लूका 8:4-15) था। यह अन्तर तो वचन को सुनने वालों का है।

"व्यावहारिक मसीहियत" की इस पत्री में याकूब वचन के द्वारा दैनिक मसीही जीवन में होने वाले अन्तर पर जोर के साथ इस विषय पर बात करता है। 1:21 का विषय परमेश्वर के वचन को ग्रहण करना है। वचन "उद्धार" दिला सकता है, परन्तु केवल तभी जब मसीही व्यक्ति इसे अपने मन में "उगने" (गहरी जड़ के साथ) देता है।

ऐसा मन बनाना कैसा रहेगा? इस आयत में जो मन वचन को सही ढंग और अच्छे प्रभाव के साथ ग्रहण करता है उसका परिचय दो आवश्यक खूबियों वाले मन के रूप में दिया गया है। पहला तो यह कि इसे "सारी मलिनता और वैर-भाव की बढ़ती का दूर" करना आवश्यक है। कई लोग वचन को अपने मनों में "बोए जाने" की अनुमति नहीं देते, क्योंकि इसमें इसके लिए कोई जगह नहीं है। जीवन के पुराने ढंग से उनका मन फिराव सम्पूर्ण नहीं होता। सुसमाचार किसी व्यक्ति में मसीही व्यवहार तथा समर्पण तब तक नहीं ला सकता जब तक वह पुराने जीवन की सभी पापपूर्ण चीजों को फैंक नहीं देता। दूसरा, सुसमाचार की डांट और सलाह "नम्रतापूर्वक" पानी आवश्यक है। कुछ मसीही लोग नाराज हो जाते हैं, जब बाइबल उन्हें किसी ऐसे पाप से जो करना उन्हें अच्छा लगता है, के लिए डांटती है और वे उनके ध्यान में लाने वाले प्रचारक या शिक्षक का विरोध करते हैं। मसीही व्यक्ति तब तक जैसा उसे बनना चाहिए नहीं बन सकता जब तक वह अपने आपको उस मार्ग से निकालकर अपने जीवन को परमेश्वर के वचन के द्वारा चलने नहीं देता। अच्छे और फलदायक मन की बातें शुद्धता और नम्रता है। कोई भी व्यक्ति जिसके मन की तारीफ इन गुणों से की जा सकती है, वह आत्मिक सामर्थ और कद में बड़ा ही होगा।

चलन और कर्म (1:22-27)

सुसमाचार की सच्चाइयों के लाभदायक होने के लिए उन्हें व्यावहारिक और कार्यों में बदलना आवश्यक है। किसी आराधना सभा में जाकर किसी महत्वपूर्ण सच्चाई की ओर थोड़ा सा ध्यान देकर सरमन को सुनना किसी काम का नहीं होगा यदि उसके परिणाम के रूप में वास्तविक व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आता। एक मण्डली में जहाँ मैं सेवक के रूप में काम करता था, मैं एक आदमी से मिला जिसे "ऊंचे शोर वाले, सीधे, पंजों पर नचाने वाले नरक की आग और गंधक" जैसे सरमन सुनना पसंद था। वह पिछले दरवाजे से आ जाता और बताता कि उसे ऐसा सरमन कितना पसंद है, चाहे उसमें सीधे तौर पर उसी को लताड़ा गया होता। कई बार मेरे मन में आता था, "इसे इस प्रकार का सरमन क्यों पसंद हैं, विशेषकर जब उसमें कभी ऐसा बदलाव दिखाई नहीं देता?" एक दिन मुझे समझ आया कि उसे लगता था यदि वह सिर झुकाकर इस प्रकार के प्रवचन को ग्रहण कर ले तो सब सही होगा। इसीलिए याकूब कहता है, "परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुनने वाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं" (1:22)।

वचन को मानने वाले होने की हमारी आवश्यकता बताते हुए याकूब तीन बातों की ओर ध्यान दिलाता है। पहले तो आयतें 23 और 24 में वह उस व्यक्ति का स्वभाव दिखाता है, जो सुनकर भूल जाता है। क्या आप किसी व्यक्ति के दपर्ण में अपना चेहरा देखने और "तुरन्त" भूल जाने की कल्पना कर सकते हैं कि वह कैसा दिखाई देता है? याकूब के लिए वचन को सुनकर इसे तुरन्त भूल जाने वाले व्यक्ति की कल्पना करना कठिन होगा। कपटी आदमी सुनता है, स्वीकृति में सिर हिलाता है और सच्चाई को मानते हुए सहमति भी जताता है, परन्तु फिर थोड़ी देर के बाद वह अपनी इच्छा अनुसार जीवन बिताने के लिए निकल पड़ता है, चाहे ऐसा करके उसे उस सच्चाई का इंकार ही करना पड़े, जो उसने अभी-अभी सुनी है। दूसरा, आयत 25 में याकूब परमेश्वर द्वारा उन लोगों के लिए प्रतिज्ञा की हुई आशीष की बात करता है जो उसके वचन को मानने वाले हैं। यह स्पष्ट ही लगेगा कि यह आशीष उस उद्धार की है जिसका उल्लेख आयत 21 में हुआ था। अन्त में याकूब उनके सुनने और उस पर अमल करने की दो चुनौतियों के आज्ञापालन के साथ समाप्त करता है। पहले आयत 26 में याकूब पूछता है, "क्या तुमने अपनी जीभ को लगाम दी?" याकूब इस दिक्कत को जानता है, जो जीभ के कारण उन में थी और हम में भी है, इसलिए वह बार-बार इस बात पर जोर देता है कि हमारे विश्वास के लिए हमारी जीभ का कुछ किया जाना आवश्यक है। दूसरा आयत 26 में, वह जानना चाहता है कि क्या हम जरूरतमंद लोगों की देखभाल में लगे हुए हैं। हमारी संगति में दूसरों की सहायता करने के "ढंग" और "कारण पर इतनी बहस हो चुकी है कि हम जरूरतमंदों को भूल गए है। हम लोग बड़े ही घटिया किस्म के कपटी होंगे यदि हम जरूरतमंदों को नजरअंदाज करें, क्योंकि हमारे परमेश्वर ने हमेशा उनकी चिंता की है। जरूरतमंद लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमें यीशु के नमूने का पालन करना होगा। यीशु लोगों से प्रेम करता था और उनकी जरूरतें पूरी करता चला गया। लोगों से प्रेम करने के कारण उसके संदेश को सुनना पसंद किया जाता था, हम भी ऐसा कर सकते हैं।

परमेश्वर के प्रेम का बंधुआ

(2 कुरिन्थियों 5:11-27)

जेम्स थॉम्पसन

परमेश्वर का नया संसार (5:16, 17)

संभावना रहती ही है कि हम बिना यह समझे कि हमारे जीवनों पर उनका क्या असर होगा हफ्ते दर हफ्ते अपने विश्वास की मुख्य बातों को दोहराते रहें। मुझे शाम की एक आराधना सभा का स्मरण आता है जहाँ प्रचारक के संदेश में

सुनने वालों की एक आवाज से रूकावट पड़ गई जिसमें कहा गया था, "तो?" यह प्रश्न प्रचारक और श्रोताओं दोनों के लिए परेशान करने वाला था और जहाँ यह किया गया था वहाँ उपर्युक्त नहीं था। परन्तु इस घटना ने मुझे याद दिलाया कि पुरानी कहानी का "तो?" है, क्योंकि यह हमारे जीवनों में अन्तर लाता है। हमारी सेवकाइयां क्रूस की कहानी से प्रभावित हुए बिना "सामान्य की भांति" चल सकती है। 5:16, सेवकाइयां क्रूस की कहानी से प्रभावित हुए बिना "सामान्य की भांति" चल सकती हैं। 5:16, 17 में पौलुस का 'सो' दिखाता है कि वह उस 'एक सबके लिए मरा' को दोहराकर संतुष्ट नहीं था। उस कहानी ने उसकी सेवकाई में फर्क डाला है, जैसा कि 5:16, 17 में दो समानांतर वाक्यों से पता चलता है।

5:16, 17 की बात क्रूसारोहण यानी उस घटना की बात है जो मानवीय मानकों से मूर्खता है, और इसने पौलुस को संसार को देखने का बिल्कुल ही नया अंदाज दे दिया है। "अब से" मसीह में नये अनुभव की बात है जिसने उसे बदल दिया है। अब वह किसी को 'मानवीय दृष्टिकोण' से नहीं 'मानता' (या 'जानता')। क्रूस का अर्थ सांसारिक मानकों का अन्त है क्योंकि इसमें संसार और यीशु मसीह को देखने का तरीका बिल्कुल नया तरीका है। यह बात 5:17 में जबर्दस्त ढंग से बताई गई है। जो मानक किसी समय महत्वपूर्ण थे अब वे प्राथमिकता की चीजें नहीं रहीं। जो मूल्य किसी समय महत्व रखते थे अब अचानक वे बेकार हो चुके हैं। मूल्यों में यह परिवर्तन उस लाचार मनुष्य की कहानी में निकला है जो क्रूस पर मर गया था। उस कहानी का मेरे लिए कोई अर्थ है, इसलिए "अब से" मैं सेवकाइयों का मूल्यांकन परमेश्वर के मानकों के अनुसार करूंगा।

मसीह में पौलुस का नया "दृष्टिकोण" आज कलीसिया के जीवन में नाजुक मुद्दे उठाता है। ऐसे समय में जब हम यह तय नहीं कर पाते कि किन सेवकाइयों की प्राथमिकता है, हमारे लिए यह पूछना उपयुक्त है कि क्या हमारे कार्यक्रमों में पौलुस के विरोधियों का "मानवीय दृष्टिकोण" दिखाई देता है या क्रूस का "नया संसार।" और सफल सेवकाई कैसे तय होती है? "मानवीय दृष्टिकोण" से पौलुस ने कई "असफल" सेवकाइयों पर "अपना समय गंवाया"। क्या सभी सेवकाइयों का मूल्यांकन "अंकों" के नियम से करना उपयुक्त है, जेसे "हम नंबर देने" के द्वारा अपनी सफलता को नाप सकते हों? दृष्टिकोण के "नये संसार" से सफलता कभी किसी प्रकार के गुणात्मक स्कोर से नहीं नापी जाएगी, जैसे स्कूलों या लाभ हानि कॉलम में या किसी कॉर्पोरेशन में नापी जाती है।

मेरा विश्वास है कि कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम जो नये "दृष्टिकोण" से मेल खाते हैं, कभी उनका प्रचार नहीं किया जाता। आमतौर पर वे कठिन परिस्थितियों में किए जाते हैं जहाँ परिणाम प्रभावशाली नहीं होते। परन्तु उन्हें उन लोगों द्वारा

किया जाता है जिन्होंने अपने आपको दूसरों के लिए अर्पित कर दिया है। मुझे उन मिशनरियों का स्मरण आता है जिन्होंने वचन को न ग्रहण करने वाले क्षेत्रों और परिवारों में दशकों तक काम किया, जिन्होंने बदलते पड़ोस में कलीसिया छोड़ने से इंकार कर दिया। इनमें से कई लोगों के अपने प्रभावशाली होने को दिखाने के प्रभावी आंकड़े नहीं थे। जिन लोगों ने उन्हें मानवीय मानकों से नापा उन्हें उनमें असफलता ही दिखाई दी। परन्तु उन लोगों ने सफलता के नाम के रूप में "मानवीय दृष्टिकोण" में फंसने से इंकार कर दिया।

यह किसकी सेवकाई है? (5:18-21)

हमारा स्वाभाविक अहंकार हमें "मानवीय दृष्टिकोण" से जीने का प्रलोभन देता है। हम पर उन कार्यक्रमों को देखने का प्रलोभन आता है, जो हमें बढ़ाते और अपनी प्राप्तियों में घमण्ड करने का कारण देते हैं। हम पर सही सेवकाइयों से बचने का भी प्रलोभन आता है, जिनमें सफलता की अधिक क्षमता नहीं होती। जब हम "सबसे बड़ी" कलीसिया पाना या "सबसे प्रतिष्ठित" कलीसिया की सेवा करने की इच्छा करते हैं तो हमारा स्वाभाविक अहंकार दांव पर होता है। सवाल उठाने का समय है, विशेषकर जब हम अपने ही अहंकार में फंसते हैं कि यह कैसी सेवकाई है?

5:18, 19 में पौलुस इस प्रश्न का उत्तर देता है। जोर इस तथ्य पर है कि "यह सब परमेश्वर की ओर से है।" हमें याद दिलाने के लिए कि यह "परमेश्वर की ओर से" है, 5:14 की तरह 18 और 19 आयतों में वह मसीही कहानी का समापन करता है। दो समानांतर वाक्यों में वह कहता है कि परमेश्वर ने मसीह के द्वारा और मसीह में (5:18) "हमें अपने साथ मिला लिया" (5:19)। यानी परमेश्वर की पहल से ही कहानी का आरंभ हुआ। उसके साथ अपने आप को बहाल करने में हमने कुछ नहीं किया।

क्रूस की कहानी बताते हुए पौलुस ने यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर ने क्या किया है एक चौकाने वाले रूपक का इस्तेमाल किया, जिसका इस्तेमाल पौलुस बहुत कम करता है। क्रूस पर परमेश्वर ने हमें अपने साथ "मिला लिया।" यह शब्द अलग होने के समय के बाद सुलह और मेल की बहाली का संकेत देता है (तुलना 1 कुरिन्थियों 7:11)। यह शब्द हमें इब्रानी अभिवादन शालोम का स्मरण दिलाता है, जो आमतौर पर एक-दूसरे से मिलने पर किया जाता था। इस शब्द का अर्थ है "शांति", परन्तु इसका अर्थ शत्रुता के न होने से बढ़कर है। इसमें एकता और पूर्णता के अनुभव का संकेत था। परमेश्वर ने मसीह के द्वारा वह किया जो हमारी पहल से नहीं हो सकता था। यानी उसने हमें शालोम बहाल कर दिया। जैसा रोमियों 5:1 में पौलुस कहता है "अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।" "बैरी" होने के बाद "उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ" (रोमियों 5:10)। यह उस बात को जो पहले

कही गई थी (5:14) कहने का अलग ढंग था कि "एक सबके लिए मरा।" यह परमेश्वर की कहानी है, हमारी नहीं।

परन्तु दूसरों को यह कहानी कैसे पता चलेगी? 5:18-20 में पौलुस ने जहाँ भी कहानी को संक्षिप्त किया है ("परमेश्वर ने हमारा मेल-मिलाप कर लिया"), उसने उनका भी उल्लेख किया, जिन्हें परमेश्वर ने यह कहानी सौंपी है, यदि परमेश्वर ने हमें मिला लिया है तो हम "मेल मिलाप की सेवा" लेते हैं (5:18)। 5:18 के अनुसार हमारी सेवकाई एक दान है ("मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है")। 5:19 के अनुसार यह एक 'भरोसा' है। यह हमारी सेवकाई नहीं है कि हम जैसा चाहें करें। -सही कार्यक्रमों का एक-दूसरे से कभी मुकाबला नहीं होता। वास्तव में हर असली सेवकाई "मेल-मिलाप की सेवा" होने के लिए होती है।

आधुनिक सेवकाइयाँ बेशक कई बार नाकाम हो जाती हैं क्योंकि उनमें दिशा और अर्थ नहीं होता। पौलुस को ऐसी दिशा की कमी नहीं थी। मेल-मिलाप की सेवा होने के कारण उसकी सेवकाई में किसी अर्थ की कमी नहीं थी। उसकी सेवकाई कर हर कार्य और हर पहलू परमेश्वर और मनुष्य में शालोम अर्थात मेल लाने की दिशा में था। वह मसीह का "दूत" है (5:20)। "दूत" शब्द सेवकाई (यानी "गुलाम", 4:5; "सेवक", 6:4) के लिए अन्य कुछ शब्दों के विपरीत बड़ा प्रतिष्ठा वाला शब्द था। पौलुस के समय में, हमारे समय की तरह दूत को अपने लीडर की ओर से बोलने का पूरा अधिकार होता था। जिन लोगों के साथ वह बात करता था उन्हें मालूम होता था कि उसकी बातें वास्तव में उसके शासक की बातें हैं। जब शांति के लिए काम करता, तो उसके पीछे सम्राट का पूरा अधिकार होता था। इस कारण पौलुस दूसरों से परमेश्वर की "शांति" को स्वीकार करने की याचना करता है, यानी सेवक के द्वारा याचना करने वाला परमेश्वर ही है।

बड़ा बदलाव (रोमियों 6)

कोय रोपर

यह बदलाव कैसे होता है?

रोमियो 6 में हमें यह ढंग पता चलता है कि यह कैसे प्राप्त होता है।

हमारा उद्धार अनुग्रह से होता है, "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:23) उद्धार एक दान है इसलिए उद्धार अनुग्रह से होता है। (रोमियों 3:24 भी देखें)।

हमारा उद्धार अनुग्रह से मसीह के द्वारा होता है, परमेश्वर हमें "हमारे प्रभु यीशु मसीह में" अनन्त जीवन देता है (रोमियों 6:23)। पौलुस कहता है, "परन्तु परमेश्वर

हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। सो जब कि हम अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे।" ध्यान दें कि परमेश्वर ने इस बात की प्रतीक्षा नहीं की कि हम उद्धार पाने के योग्य हो जाएं बल्कि "जब हम पापी ही थे तभी" उस ने मसीह को हमारे लिए मरने हेतु दे दिया।

इस कारण हमारा उद्धार यीशु मसीह में और उसके द्वारा प्राप्त होता है। रोमियों 6:11 कहता है, "ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो।" इसका अर्थ यह हुआ कि मसीह के बाहर उद्धार नहीं है। हमारा उद्धार विश्वास से स्वीकार किया जाता है, "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें" (रोमियों 5:1)। इफिसियों 2:8 में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।"

परन्तु रोमियों 6 यह भी स्पष्ट कर देता है कि हमारा उद्धार विश्वास से आज्ञा मानने के द्वारा होता है। रोमियों 6:17, 18 पर ध्यान दें: "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।"

ये आयतें सिखाती है कि उद्धार आज्ञा मानने के बाद मिलता है। पौलुस कहता है कि "तुम पाप के दास थे, "परन्तु" तुम मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए" और "पाप के छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।" इसका क्रम इस प्रकार हैं, पहले, पाप के दास, दूसरा, उपदेश के मानने वाले, तीसरा, पाप से छुड़ाए गए, चौथा धर्म के दास। रोमी लोगों का उद्धार विश्वास से हुआ था, परन्तु उनका उद्धार तब तक नहीं हुआ जब तक उन्होंने आज्ञा नहीं मानी थी; यानी उनका उद्धार "विश्वास को मानने" (रोमियों 1:5; 16:26) से यानी उस "विश्वास जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है" से हुआ था (गलातियों 5:6)।

उन्होंने क्या आज्ञा मानी? रोमियों 6:17 कहता है कि उन्होंने "उपदेश के सांचे" को माना था जो उन्हें दिया गया था। इसका क्या अर्थ है? रोमियों 6:3-5 इसका उत्तर देता है: "*क्या* तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।"

सुसमाचार मसीह की मृत्यु गाड़े जाने और जी उठने को ही दिखाता है। पौलुस ने लिखा: "हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिस में तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा

तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैं ने सबसे पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया" (1 कुरिन्थियों 15:1-5)।

नया नियम भी हमें बताता है कि सुसामचार की आज्ञा मानना आवश्यक है (2 थिस्सलुनीकियों 1:8, 9, 1 पतरस 4:17, 18, रोमियों 10:16)।

कोई उस सुसमाचार की आज्ञा कैसे मान सकता है जो मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने को दर्शाता है? इसका उत्तर है, बपतिस्मा लेकर हमारा बपतिस्मा मसीह की मृत्यु गाड़े जाने और जी उठने का चित्रण है। बल्कि यह उससे भी बढ़कर है। यानी बपतिस्मा लेने पर हम मसीह के साथ सहभागी होते हैं और उसकी मृत्यु गाड़े जाने और जी उठने में उसके साथ एक होते हैं। बपतिस्मा लेने पर हमें मसीह की मृत्यु का बपतिस्मा दिया जाता है यानी हमें मसीह के साथ दफना दिया जाता है, और हम मसीह के साथ जी उठते हैं। इस प्रकार बपतिस्मा लेने पर हम सुसमाचार की आज्ञा को मान रहे होते हैं और तभी इससे पहले हमारा उद्धार नहीं होता है। उद्धार बपतिस्मा लेने के पश्चात होता है। उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा आवश्यक है। "उपदेश का वह सांचा" जिसे रोमियों ने माना था उसमें बपतिस्मा शामिल है।

बेशक अकेला बपतिस्मा उद्धार नहीं करता। बपतिस्मा विश्वास से ही होता है और बिना विश्वास के इसका कोई मतलब नहीं (कुलुस्सियों 2512)। बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराना आवश्यक है और बिना मन फिराए बपतिस्मा लेने का कोई मतलब नहीं है (प्रेरितों 2:38; 17:30)। बिना विश्वास किए और मन फिराए बपतिस्मा लेने से उद्धार नहीं होगा। परन्तु यदि हम सुसमाचार के आज्ञापालन के लिए बपतिस्मा लेने को तैयार नहीं हैं तो विश्वास करना और मन फिराना अकेले किसी काम के नहीं।

इस बदलाव के क्या परिणाम हैं?

रोमियों 6 इसके परिणाम बताता है। बदलाव का परिणाम नया जीवन होता है। पौलुस कहता है कि हम "नये जीवन की चाल" चलते हैं (रोमियों 6:4) और "पाप के लिए तो मरे हुए परन्तु परमेश्वर के लिए जीवित" होते हैं (रोमियों 6:11)। तात्पर्य यह है कि मसीह बनने पर परमेश्वर के परिवार में परमेश्वर के बालकों के रूप में हमारा नया जन्म होता है।

बड़ा बदलाव जो होता है या होना चाहिए वह बदला हुआ जीवन है। परन्तु मसीही व्यक्ति का जीवन बदलता हुआ है या नहीं यह उसी के ऊपर निर्भर है।

इस अध्याय में पौलुस उसकी बात पर विचार करने के बाद उसके सुनने वालों

के द्वारा दिए जा सकने वाले दो तर्कों को काट देता है।

एक तर्क जिसका उसने अनुमान लगाया वह यह है, "यदि हमारा उद्धार अनुग्रह से होता है, और यदि अनुग्रह बहुतायत से वहाँ होता है, जहाँ बहुत पाप हो जैसा कि तुम कहते हो (रोमियों 5:20), तो हमें और पाप करना चाहिए ताकि अनुग्रह बहुत" (रोमियों 6:1) हो। यह कहने का उनका उद्देश्य यह होगा कि वास्तव में अधिक पाप करने का प्रस्ताव रखना नहीं बल्कि यह दिखाना है कि पौलुस का इस बात का जोर कि हमारा उद्धार अनुग्रह से होता है, न कि व्यवस्था से, गलत होना चाहिए।

पौलुस उनके तर्क का उत्तर यह कहते हुए देता है जिसका अर्थ है, "नहीं, क्योंकि यह उचित नहीं है कि हम जो पाप से छुड़ाए गए हैं पाप करते रहें।" "हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उसमें क्योंकर जीवन बिताएं?" (रोमियों 6:2)।

दूसरा तर्क जिसका उत्तर पौलुस यह कहकर देता है वह यह है, "यदि हम व्यवस्था के अधीन नहीं है जैसा तुम कहते हो (रोमियों 6:14) तो हम पाप से बचने की किसी जिम्मेदारी से छूट गए हैं।" "तो क्या हुआ? क्या हम इसलिए पाप करें, कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन अनुग्रह के अधीन हैं? कदापि नहीं।" (रोमियों 6:15)। पौलुस उत्तर देता है, "नहीं, क्योंकि स्वतंत्रता में जिम्मेदारी शामिल हैं। और यदि हम पाप की सेवा करते रहें तो हम स्वतंत्र नहीं बल्कि पाप के दास ही हैं।"

इस प्रकार अध्याय का मुख्य व्यावहारिक जोर यह है कि एक मसीही का जीवन बदला हुआ हो। पौलुस कई विश्वास दिलाने वाले कारण देता है कि मसीही व्यक्ति को पाप क्यों नहीं करना चाहिए बल्कि बदला हुआ जीवन बिताना चाहिए; (1) मसीही व्यक्ति को पाप नहीं करना चाहिए क्योंकि उसे पाप से छुड़ाया गया है (रोमियों 6:2, 9-11)। हम दोष से, मांगों से और पाप की सामर्थ से छुड़ाए गए हैं। निश्चय ही हमें पाप में रहकर दासता में वापस नहीं जाना चाहिए। (2) मसीही व्यक्ति को पाप नहीं करना चाहिए क्योंकि वह नया जीवन जी रहा है (रोमियों 6:4)। बदलाव हो चुका है यानी उसका नया जन्म हो चुका है। नये जीवन के लिए नये मानक होने आवश्यक है। (3) मसीही व्यक्ति को पाप नहीं करना चाहिए क्योंकि अब वह परमेश्वर का सेवक अर्थात परमेश्वर का गुलाम है (रोमियों 6:18)। इसलिए वह परमेश्वर की सेवा करने और आज्ञा मानने का जिम्मेदार है। (4) मसीही को पाप नहीं करना चाहिए क्योंकि यदि वह पाप करता है तो नाश होगा (रोमियों 6:21-23)।